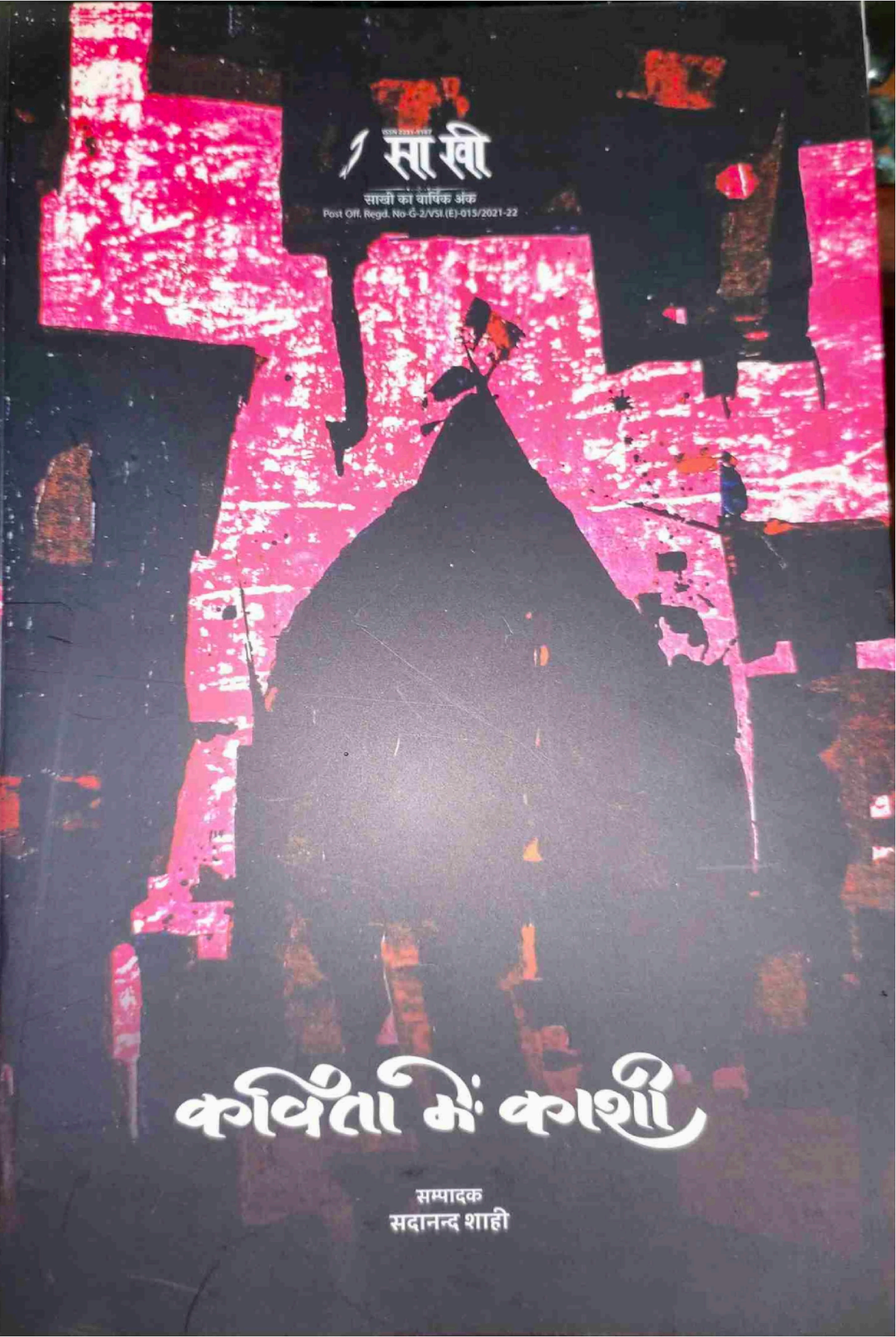

# साखी

साखी का वार्षिक अंक
Post Off. Regd. No-G-2/VSI.(E)-015/2021-22

# कविता में काशी

सम्पादक
सदानन्द शाही

अंक : 37
मास : जनवरी 2022
ISSN : 2231-5187

# पाखी

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान का त्रैमासिक

**संस्थापक** : केदारनाथ सिंह
**सम्पादक** : सदानन्द शाही

www.premchandsahityasansthan.com

**संस्थापक :** केदारनाथ सिंह

**सम्पादक मण्डल :** पी. एन. सिंह/अवधेश प्रधान/रघुवंश मणि/सन्ध्या सिंह
**सम्पादक :** सदानन्द शाही
**सहायक सम्पादक :** डॉली मेघनानी

**प्रतिनिधि :** भानुप्रताप सिंह, मो. 8299206277 (**गोरखपुर**)
बृजराज कुमार सिंह, मो. 9838709090 (**आगरा**)
कमल कुमार, मो. 7003022681 (**कोलकाता**)
सुजीत कुमार सिंह, मो. 9454351608 (**इलाहाबाद**)
निरंजन कुमार यादव, मो. 8726374017 (**गाजीपुर**)
अमित कुमार सिंह, मो. 9407655400 (**बिलासपुर**)
विशाल विक्रम सिंह, मो. 9461672755 (**जयपुर**)
राकेश कुमार रंजन, मो. 9450938895 (**गया**)

**आवरण चित्र :** विजय सिंह

**सज्जा :** राहुल कुमार शॉ
**रेखांकन :** पी. बी. लाल, मृदुला सिन्हा और राहुल शा
**प्रसार :** विश्वमौलि, मो. 9450209580
इन्दुशेखर त्रिपाठी, मो. 7376831000

**अक्षर संयोजन :** श्री काशी विश्वनाथ कम्प्यूटर, वाराणसी
**मुद्रक :** मित्तल आफसेट, वाराणसी

**सहयोग राशि :**

| | | |
|---|---|---|
| यह अंक | : | **अस्सी रुपये मात्र** |
| सदस्यता | : | **तीन सौ रुपये मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस वर्ष के लिए) तीन हजार रुपये मात्र** |
| संस्थाओं के लिए | : | **पाँच सौ रुपये मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस वर्ष के लिए) पाँच हजार रुपये मात्र** |
| विदेश के लिए | : | **चालीस डॉलर मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस अंकों के लिए) पाँच सौ डालर मात्र** |

कृपया भुगतान 'साखी' के नाम डिमांड ड्राफ्ट /चेक/धनादेश से सम्पादकीय पते पर भेजें। बाहर के चेक में 15 रुपये अतिरिक्त जोड़ें अथवा साखी के खाता संख्या-**19270100012904** RTGS/NEFT IFSC Code **BARB0LANKAX (0 as Zero)** बैंक ऑफ बड़ौदा, लंका-वाराणसी में जमा करें।

**सम्पादकीय सम्पर्क**
क
बी-2, सत्येन्द्र गुप्त नगर, लंका
वाराणसी-221005, उ.प्र.
दूरभाष/फैक्स : 0542-2366771
मोबाइल : 09450091420, 9616393771

**ईमेल**
saakhee2000@gmail.com
**वेवसाइट**
www.premchandsahityasansthan.com

(वाद क्षेत्र : वाराणसी न्यायालय)

**(राजेश कुमार मल्ल, सचिव-प्रेमचन्द साहित्य संस्थान, प्रेमचन्द पार्क, बेतियाहाता, गोरखपुर, उ.प्र. द्वारा प्रकाशित)**

**www.notnul.com** पर सभी अंक उपलब्ध

# इस अंक में


| | | |
|---|---|---|
| बनारस का सांस्कृतिक संदर्भ | अवधेश प्रधान | 11 |
| काशी में कविता : कविता में काशी | रामसुधार सिंह | 15 |
| बनारसि आस-पासा | रैदास | 17 |
| भटकि मरै जनि कोई | कबीर | 18 |
| काशी गुरु सुख धाम | सेन भगत | 19 |
| बूझिए न ऐसी गति संकर-सहर की | तुलसीदास | 20 |
| सोहत काशिका | गिरिधर दास | 23 |
| देखी तुमरी कासी | भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | 24 |
| उत्तरवाहिनी गंगा | जगन्नाथदास रत्नाकर | 27 |
| अरी वरुणा की शांत कछार | जयशंकर प्रसाद | 28 |
| असी | प्रभाकर माचवे | 30 |
| सारनाथ की एक शाम | शमशेर बहादुर सिंह | 32 |
| चार कविताएँ | त्रिलोचन | 35 |
| सनातन नगरी काशी | शम्भूनाथ सिंह | 38 |
| छह कविताएँ | श्रीकान्त वर्मा | 40 |
| चार कविताएँ | मोहनलाल गुप्त 'भैयाजी बनारसी' | 47 |
| धनुषाकार काशी है | विष्णुचंद्र शर्मा | 50 |
| खुली हथेली और तुलसी गंध | ठाकुर प्रसाद सिंह | 55 |

| | | |
|---|---|---|
| बनारस | केदारनाथ सिंह | 61 |
| काशी की स्मृति | सूर्य प्रताप | 64 |
| तुलसी के दक्षिणमुख हनुमान मंदिर | भानुशंकर मेहता | 65 |
| बुढ़वा मंगल | वामिक जौनपुरी | 69 |
| पाँच कविताएँ | नजीर बनारसी | 73 |
| गंगा उदास है | कैलाश गौतम | 78 |
| वाराणसी में गंगा के तट पर एक शाम | प्रयाग शुक्ल | 80 |
| दो कविताएँ | राजेश जोशी | 82 |
| गंगा को प्यार | अरुण कमल | 86 |
| चार कविताएँ | ज्ञानेन्द्रपति | 88 |
| यह बनारस है | अष्टभुजा शुक्ल | 94 |
| बनारस | दिनेश कुशवाह | 98 |
| लौटना बनारस से | नरेन्द्र पुंडरीक | 101 |
| बनारस की गलियाँ | डॉ. देव | 105 |
| बनारस में एक दिन | यश मालवीय | 107 |
| गंगा पार की रेतीली धूप | चन्द्रभाल सुकुमार | 109 |
| चार कविताएँ | शिव कुमार पराग | 111 |
| बनारस में ठंड | विमलेश त्रिपाठी | 116 |
| बनारस | अशोक कुमार सिंह | 118 |
| बनारस से निकलते वक़्त | निशांत | 120 |
| दो कविताएँ | प्रीति जायसवाल | 121 |
| बनारस | अनुज लुगुन | 123 |
| चिराग़-ए-दैर | गालिब | 124 |
| बनारस | सफ़ी लखनवी | 139 |
| बनारस | रईस अमरोहवी | 141 |
| बनारस | 'रविश' बनारसी | 143 |
| मणिकर्णिका | शंख घोष | 145 |
| अथुआ | हरिराम द्विवेदी | 147 |
| कहाँ गंगाजल औ कहाँ गंदा पानी | चकाचक बनारसी | 150 |
| देव-दुख | प्रकाश उदय | 152 |

| | | |
|---|---|---|
| गंगा में नौका-विहार | केकी एन. दारुवाला (अनु. आशा विश्वास) | 155 |
| वाराणसी | मेरी ऑलिवर (अनु. मधु सिंह) | 158 |
| लीलामय | व्योमेश शुक्ल | 160 |
| बनारस में | राकेश रंजन | 168 |
| बनारस से गायब हो गई गंगा | सदानन्द शाही | 169 |
| काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का कुलगीत | शान्तिस्वरूप भटनागर | 172 |
| महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ का कुलगीत | शम्भुनाथ सिंह | 174 |
| सहयोगी | | 176 |

पोस्टर - पंकज

किसी अलक्षित सूर्य को
देता हुआ अर्घ्य
शताब्दियों से इसी तरह
गंगा के जल में
अपनी एक टाँग पर खड़ा है यह शहर
अपनी दूसरी टाँग से
बिलकुल बेख़बर !

- केदारनाथ सिंह

कविता 'बनारस' से